आचार्य बुद्धघोस

कृत

परमत्थजोतिका

सुत्तनिपात-अट्ठकथा

भाग - १

हिंदी अनुवाद

अनुवादक

प्रो. अंगराज चौधरी

विपश्यना विशोधन विन्यास

समर्पण

विपश्यना आचार्यप्रवर श्री सत्यनारायण गोयन्काजी को सादर समर्पित

जिन्होंने मुझे बुद्ध के व्यावहारिक दर्शन और पालि साहित्य के मर्म को समझने की दृष्टि दी।

– अंगराज चौधरी

प्रकाशकीय

लगभग १६०० वर्ष पूर्व बुद्धघोस द्वारा लिखित सुत्तनिपात अट्ठकथा, जिसे परमत्थजोतिका भी कहते हैं, का आज तक हिंदी में अनुवाद नहीं हुआ है। प्रो० अंगराज चौधरी ने सर्वप्रथम इसका हिंदी में अनुवाद किया है। विपश्यनाचार्य पूज्य गोयन्काजी से जो दृष्टि इन्होंने पायी है उसी के आलोक में यह अनुवाद कार्य संपन्न हुआ है। जगह-जगह पर इस पुस्तक में साधना संबंधी बहुत-सी गंभीर बातें हैं जो आजकल सुबोध नहीं हैं। फिर भी विपश्यना का अभ्यास करनेवाले इसे बहुत दूर तक समझ सकते हैं– इसमें संदेह नहीं है।

पू० गोयन्काजी तीन भिक्षुओं द्वारा किये गये त्रिपिटक के अनुवाद से परिचित थे, इसलिए उनकी बड़ी इच्छा थी कि यदि अट्ठकथाओं का हिंदी में अनुवाद हो जाय तो हिंदी भाषा तो समृद्ध होगी ही, बहुत से पाठक जो पालि नहीं समझते हैं इसे पढ़कर लाभान्वित होंगे।

उन्हें यह भी पता था कि त्रिपिटक का हिंदी अनुवाद भी विपश्यना के दृष्टिकोण से न होने पर शतप्रतिशत ठीक नहीं है। इसे ही देखने के लिए उन्होंने प्रो० अंगराज चौधरी को अंगुत्तर निकाय का भदंत कौसल्यायन द्वारा किये अनुवाद को आधार बनाकर जहां-जहां विपश्यना का उल्लेख आता है, सुधारने कहा था ।

प्रो० अंगराज चौधरी ने सुत्तनिपात अट्ठकथा भाग-१ का हिंदी अनुवाद आज से लगभग १५ वर्ष पहले कर दिया था। अब उसको इन्होंने पुनः सुधार कर छापने योग्य बनाया है।

विपश्यना विशोधन विन्यास से अट्ठकथा साहित्य की हिंदी में छपनेवाली पुस्तकों में यह प्रथम पुस्तक है।

विपश्यना विशोधन विन्यास इस प्रथम पुष्प को पाठकों को समर्पित करता है और मंगल कामना करता है कि उन्हें इसका पूरा लाभ मिले।

विपश्यना विशोधन विन्यास